Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

भारत का भूगोल

(मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम *(Distance Learning Programme)*

Code: MPPM10

दृष्टि The Vision

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

भारत का भूगोल

(मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 8750187501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को “like” करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

MPPCS DLP

विषय सूची (Contents)

1.	**भारत की भूगर्भिक संरचना एवं भू-आकृतिक प्रदेश**	**7–32**
1.1	भारत की भूगर्भिक संरचना	7
1.2	भारत के भू-आकृतिक प्रदेश	10
1.3	भारत एवं हिंद महासागर	24
1.4	मध्य प्रदेश का भौतिक स्वरूप	24
2.	**अपवाह तंत्र**	**33–52**
2.1	भारत का अपवाह तंत्र	33
2.2	भारत के अपवाह तंत्र का वर्गीकरण	35
2.3	हिमालयी तथा प्रायद्वीपीय नदियों की तुलना	46
2.4	मध्य प्रदेश का अपवाह तंत्र	48
3.	**भारत की जलवायु**	**53–78**
3.1	भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक	53
3.2	मानवीकारी दृश्यभूमियाँ एवं भारतीय मानसून	55
3.3	भारतीय जलवायु की प्रमुख विशेषताएँ	56
3.4	मानसून	57
3.5	मानसून की उत्पत्ति संबंधी विचारधारा	58
3.6	पश्चिमी विक्षोभ	65
3.7	मानसून का निवर्तन (लौटता हुआ मानसून)	65
3.8	वर्षा का वितरण	66
3.9	मानसून पूर्व वर्षा	67
3.10	भारत के जलवायु प्रदेश	68
3.11	जलवायु से संबंधित प्रमुख शब्दावलियाँ	73
3.12	मध्य प्रदेश की जलवायु	74

4. भारत की प्राकृतिक वनस्पतियाँ **79–101**

4.1 प्राकृतिक वनस्पतियों के प्रकार 79

4.2 राष्ट्रीय वन नीति 82

4.3 भारत वन स्थिति रिपोर्ट, 2019 83

4.4 मध्य प्रदेश की वनस्पतियाँ 91

4.5 मध्य प्रदेश की नई वन नीति, 2005 93

4.6 प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण 95

4.7 वनों का महत्त्व 97

4.8 सामाजिक वानिकी 99

5. भारत की मृदा **102–117**

5.1 मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुण 102

5.2 मृदा निर्माण प्रक्रिया 106

5.3 मृदा संगठन एवं उसके प्रकार 106

5.4 मृदा क्षरण एवं उसकी समस्याएँ 111

5.5 मध्य प्रदेश की प्रमुख मृदाएँ 113

5.6 मध्य प्रदेश में मृदा संरक्षण 114

6. भारतीय कृषि व्यवस्था **118–187**

6.1 कृषि पारिस्थितिकी एवं मानव के लिये इसकी प्रासंगिकता 124

6.2 कृषि का धारणीय प्रबंधन एवं संरक्षण 127

6.3 भारत में कृषि के प्रकार 129

6.4 आधारभूत संरचना : फसलें, फसल चक्र, कृषि जोत का आकार, बीज तथा सिंचाई व्यवस्था 132

6.5 हरित क्रांति 157

6.6 प्रमुख बहु-उद्देश्यीय परियोजनाएँ 158

6.7 मध्य प्रदेश में सिंचाई सुविधाएँ एवं परियोजनाएँ 161

6.8 मिश्रित कृषि : बागवानी, मुर्गीपालन, डेयरी, मत्स्य एवं पशुपालन 163

6.9 कृषि उत्पादों के परिवहन, भंडारण एवं विपणन से संबंधित समस्याएँ एवं समाधान 173

6.10 मध्य प्रदेश की कृषि व्यवस्था 176

6.11 भारत में भूमि सुधार 181

7.	**भारत का आर्थिक भूगोल**	**188–219**
7.1	प्राकृतिक संसाधन एवं उनका वितरण	188
7.2	मध्य प्रदेश के प्रमुख खनिज एवं ऊर्जा संसाधन	212
8.	**उद्योग एवं औद्योगिक प्रदेश**	**220–251**
8.1	भारत में औद्योगिक विकास	220
8.2	खनिज आधारित उद्योग	223
8.3	वन आधारित उद्योग	227
8.4	पर्यटन उद्योग	230
8.5	कृषि आधारित उद्योग	232
8.6	अन्य उद्योग	237
8.7	भारत के औद्योगिक प्रदेश	241
8.8	मध्य प्रदेश के उद्योग	244
8.9	मध्य प्रदेश के औद्योगिक क्षेत्र	246
9.	**भारत में परिवहन**	**252–274**
9.1	सड़क परिवहन	252
9.2	रेल परिवहन	258
9.3	वायु परिवहन	261
9.4	जल-मार्ग परिवहन	263
9.5	प्रमुख बंदरगाह	264
9.6	पाइपलाइन परिवहन	267
9.7	मध्य प्रदेश में परिवहन	267
9.8	मध्य प्रदेश परिवहन नीति, 2010	270
10.	**भारत में खाद्य-प्रसंस्करण एवं संबंधित उद्योग**	**275–280**
10.1	स्थान निर्धारण, पूर्ववर्ती एवं अग्रवर्ती आवश्यकताएँ	275
10.2	मांग एवं पूर्तिश्रृंखला प्रबंधन	277
10.3	संभावनाएँ एवं महत्त्व	278

11.	**जनांकिकीय व्यवस्था**	**281–314**
	11.1 भारत की जनांकिकीय व्यवस्था की विशेषताएँ	281
	11.2 भारतीय जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक	283
	11.3 जनसंख्या संबंधी प्रमुख सिद्धांत	287
	11.4 भारत की जनगणना, 2011	288
	11.5 भारत की प्रजातियाँ एवं जनजातिया	302
	11.6 शब्दावली	307
	11.7 मध्य प्रदेश की जनांकिकीय व्यवस्था	309
	11.8 मध्य प्रदेश की प्रमुख जनजातिया	311
12.	**भारतीय राज्य एवं उनकी स्थलीय सीमाएँ**	**315–344**
	12.1 भौगोलिक अवस्थिति	315
	12.2 भारतीय राज्य एवं उनकी स्थलीय सीमाए	321
	12.1 केंद्रशासित प्रदेश	336

अध्याय
1

भारत की भूगर्भिक संरचना एवं भू-आकृतिक प्रदेश (Geological Structure and Physiographic Regions of India)

1.1 भारत की भूगर्भिक संरचना *(Geological Structure of India)*

चट्टानों के स्वरूप एवं प्रकृति की जानकारी के लिये भूगर्भिक संरचना का अध्ययन आवश्यक है, क्योंकि खनिज पदार्थों की उपस्थिति एवं मिट्टियों की बनावट चट्टानों की संरचना पर निर्भर करती है। भारत की भूगर्भिक संरचना में प्राचीनतम एवं नवीनतम दोनों प्रकार की चट्टानें पाई जाती हैं। एक ओर प्रायद्वीपीय भारत में आर्कियन युग की प्राचीनतम चट्टानें पाई जाती हैं, वहीं दूसरी ओर मैदानी भागों में क्वार्टरनरी युग की नवीनतम परतदार चट्टानों की बहुलता है। डेल्टाई क्षेत्रों एवं तटीय भागों में नवीनतम चट्टानों का निर्माण निरंतर जारी है। भूगर्भिक संरचना की उपयोगिता धात्विक व अधात्विक खनिज दोहन एवं मृदा के रूप में है। विभिन्न कालानुक्रम में निर्मित संरचना के कारण भारत की भूगर्भिक संरचना में पर्याप्त भिन्नता है।

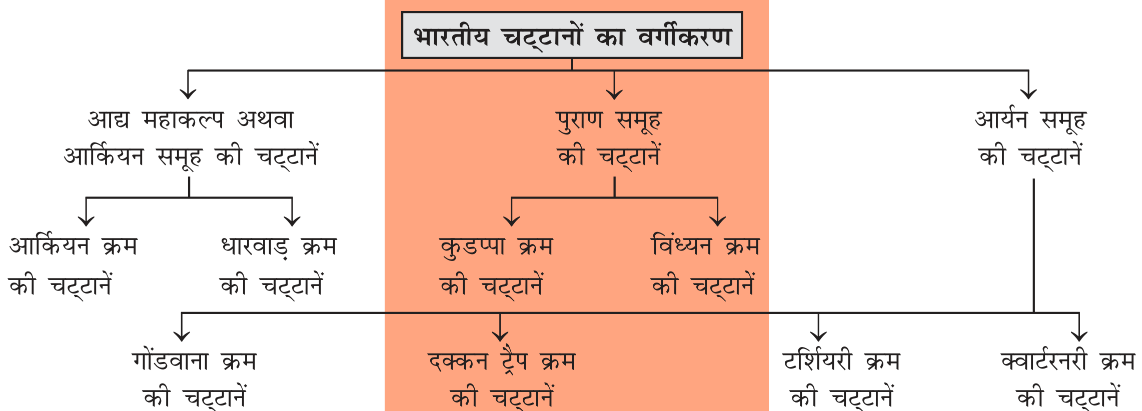

आर्कियन समूह की चट्टानें *(Rocks of the Archean Group)*

- **आर्कियन क्रम की चट्टानें:** ये प्राचीनतम चट्टानें हैं। इन चट्टानों का निर्माण तप्त पृथ्वी के ठंडा होने के फलस्वरूप हुआ है। अत्यधिक रूपांतरण के कारण इनका मौलिक रूप परिवर्तित हो चुका है एवं इन चट्टानों में जीवाश्म का अभाव है। ये नीस एवं शिष्ट प्रकार की चट्टानें हैं। आर्कियन शैलों में खनिज संपदा का भंडार पाया जाता है। इन चट्टानों में धात्विक, अधात्विक दुर्लभ खनिज पाए जाते हैं। ये चट्टानें मुख्यत: कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, छोटानागपुर पठार, दक्षिण-पूर्वी राजस्थान के अलावा महान हिमालय के गर्भ में भी मौजूद हैं।
- **धारवाड़ क्रम की चट्टानें:** धारवाड़ क्रम की चट्टानों का निर्माण आर्कियन क्रम की चट्टानों के अपरदन एवं निक्षेपण के फलस्वरूप हुआ है। इनमें जीवाश्म का अभाव पाया जाता है। इस क्रम की चट्टानी संरचना कर्नाटक के धारवाड़ व शिमोगा ज़िले में देखने को मिलती है। इसके अलावा मध्य एवं पूर्वी प्रायद्वीप, उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र एवं प्रायद्वीपेतर क्षेत्रों (मेघालय पठार, हिमालय क्षेत्र आदि) में यह संरचना पाई जाती है। अरावली पर्वत का निर्माण धारवाड़ क्रम की चट्टानों से हुआ है। इस क्रम की चट्टानें आर्थिक दृष्टि से सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इसमें सभी प्रमुख धात्विक खनिज, जैसे- लोहा, सोना, मैंगनीज़, अभ्रक, कोबाल्ट, क्रोमियम, तांबा, टंगस्टन, सीसा, मूल्यवान पत्थर व गृह निर्माण के पदार्थ पाए जाते हैं।

मध्य प्रदेश पर्वत श्रेणी	
पर्वत श्रेणी	**विशेषताएँ**
अरावली पर्वत	● यह विश्व की सबसे पुरानी पर्वत श्रृंखला है। ● यह मध्य मालवा पठार के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में स्थित है।
विंध्याचल पर्वत	● यह नर्मदा नदी के उत्तर में पूर्व से पश्चिम की ओर स्थित है। ● इस पर्वत की औसत ऊँचाई लगभग 457 से 610 मीटर तक है। ● इस पर्वत की सर्वाधिक ऊँची चोटी अमरकंटक (1,057 मीटर) है। ● इस पर्वत का निर्माण क्वाट्र्ज़ एवं बलुआ पत्थरों से हुआ है। ● इस पर्वत से नर्मदा, सोन एवं बेतवा नदियाँ निकलती हैं।
सतपुड़ा	● इस पर्वत का विस्तार नर्मदा नदी के दक्षिण में विंध्याचल के समानांतर 1,120 किमी. लंबाई में है। ● इस पर्वत की सर्वोच्च चोटी धूपगढ़ है, जिसकी ऊँचाई 1,350 मीटर है, जो मध्य प्रदेश की सबसे ऊँची चोटी है। साामान्यत: धूपगढ़ महादेव पर्वत की सर्वोच्च चोटी भी है। ● इस पर्वत का निर्माण ग्रेनाइट एवं बेसाल्ट चट्टानों से हुआ है।
मैकाल-अमरकंटक श्रेणी	● इस पर्वत श्रेणी का निर्माण बलुआ पत्थर, क्वाट्र्ज़ एवं अवसादी चट्टानों से हुआ है। ● मध्य प्रदेश के शहडोल, मंडला एवं डिंडोरी ज़िलों में यह पर्वत श्रेणी स्थित है।
महादेव पर्वत श्रेणी	● इस पर्वत श्रेणी का विस्तार मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा, सिवनी, होशंगाबाद एवं नरसिंहपुर के ज़िलों में है। ● इस पर्वत श्रेणी का निर्माण बलुआ पत्थर एवं क्वाट्र्ज़ चट्टानों से हुआ है। ● मध्य प्रदेश का हिल स्टेशन पंचमढ़ी इसी पर्वत श्रेणी में स्थित है।
कैमूर-भांडेर श्रेणी	● इस पर्वत श्रेणी का निर्माण लाल बलुआ पत्थर एवं क्वाट्र्ज़ चट्टानों से हुआ है। ● यह मध्य प्रदेश के सीधी, पन्ना, रीवा, सतना एवं छतरपुर ज़िलों में स्थित है। ● यह श्रेणी यमुना एवं सोन नदी की जल विभाजक है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- भारत की भूगर्भिक संरचना में प्राचीनतम एवं नवीनतम दोनों प्रकार की चट्टानें पाई जाती हैं।
- भारत के आर्कियन क्रम की चट्टानें सर्वाधिक प्राचीन चट्टानें हैं। इन चट्टानों में जीवाश्म नहीं पाया जाता है।
- धारवाड़ क्रम की चट्टानों में देश की लगभग सभी प्रमुख धातुएँ पाई जाती हैं, जैसे- सोना, मैंगनीज़, लोहा, तांबा, टंगस्टन, क्रोमियम, जस्ता आदि।
- अरावली पर्वत विश्व के सर्वाधिक प्राचीन पर्वतों में से एक है।
- गोंडवाना की चट्टानों का निर्माण ऊपरी कार्बोनिफेरस युग से जुरैसिक युग के बीच हुआ है। इस क्रम में कोयले का निक्षेप हुआ है। जीवाश्म की बहुलता होती है।
- हिमालय एक वलित पर्वत है। हिमालय का उत्थान टर्शियरी काल में संपन्न हुआ।
- महान हिमालय को 'हिमाद्री हिमालय' भी कहा जाता है।
- महान हिमालय के प्रमुख दर्रे हैं- बुर्जिल दर्रा (PoK), बडालाचा दर्रा (हिमाचल प्रदेश), जोज़िला दर्रा (जम्मू और कश्मीर), माना दर्रा (उत्तराखंड)।

- कश्मीर घाटी वृहत् हिमालय व पीरपंजाल श्रेणियों के मध्य स्थित है।
- लघु हिमालय की प्रमुख श्रेणियाँ हैं- पीरपंजाल श्रेणी, धौलाधर श्रेणी, महाभारत श्रेणी, मसूरी श्रेणी।
- ट्रांस हिमालय को 'तिब्बत हिमालय' भी कहा जाता है।
- काराकोरम श्रेणी को उच्च 'एशिया की रीढ़' कहा जाता है।
- भारत के विशाल मैदान को 'सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान' भी कहा जाता है। इसके अंतर्गत भाबर का मैदान, तराई का मैदान, बाँगर का मैदान तथा खादर का मैदान आता है।
- अरावली पर्वत विश्व का प्राचीनतम पर्वत है। इसका निर्माण प्री कैंब्रियन काल में हुआ है।
- मेघालय का पठार प्रायद्वीपीय पठार का ही भाग है। यहाँ गारो, खासी एवं जयंतिया पहाड़ियाँ हैं।
- पश्चिमी घाट पर्वत प्रायद्वीपीय पठार का अपरदित खड़ा कगार है।
- पश्चिमी घाट के प्रमुख दर्रे हैं- थाल घाट, भोर घाट, पाल घाट एवं सिनकोट।
- पश्चिमी घाट एवं पूर्वी घाट पर्वतों का मिलन स्थल नीलगिरि पर्वत है। नीलगिरि पर्वत की सबसे ऊँची चोटी दोदाबेटा (2,637 मी.) है।
- पूर्वी घाट पर्वत की सबसे ऊँची चोटी झिंदागड़ा (विशाखापत्तनम) है।
- पश्चिमी तटीय मैदान के अंतर्गत आते हैं- गुजरात का मैदान, कोंकण का मैदान, कर्नाटक का मैदान एवं केरल या मालाबार का मैदान।
- सिंधु नदी क्षेत्र मरुस्थलीय भाग से होकर बहती है।
- पूर्वी तटीय मैदान के उत्तरी भाग को उत्तरी सरकार तट एवं दक्षिणी भाग को कोरोमंडल तट कहा जाता है।
- लक्षद्वीप का निर्माण मूंगे से हुआ है अर्थात् यह प्रवाल निर्मित है।
- अंडमान निकोबार द्वीप समूह का निर्माण टर्शियरी सामुद्रिक वलित पर्वतों के फलस्वरूप हुआ है।
- राष्ट्रीय एटलस और थिमेटिक मानचित्र संगठन कोलकाता में स्थित है।
- नर्मदा घाटी सतपुड़ा और विध्याचल पर्वत शृंखला के बीच स्थित है।
- सतपूड़ा क्षेत्र के श्रेणियों में से पश्चिम से पूर्व की ओर स्थित हैं- बड़वानी की पहाड़ियाँ, महादेव श्रेणी, मेकल श्रेणी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सतपुड़ा क्षेत्र में स्थित श्रेणियों में से पश्चिम से पूर्व की ओर उनकी स्थिति को दर्शाने वाला निम्नलिखित में से कौन-सा क्रम सही है? **M.P.P.C.S. (Pre) 2019**
   (a) बड़वानी की पहाड़ियाँ-महादेव श्रेणी-मेकम श्रेणी
   (b) महादेव श्रेणी-मेकल श्रेणी-बड़वानी की पहाड़ियाँ
   (c) महादेव श्रेणी-मेकल श्रेणी-बड़वानी की पहाड़ियाँ
   (d) मेकल श्रेणी महादेव श्रेणी-बड़वानी की पहाड़ियाँ
2. हिमालय के किस भाग पर 'करेवा' भू-आकृति पाई जाती है? **M.P.P.C.S. (Pre) 2019**
   (a) उत्तर-पूर्वी हिमालय
   (b) पूर्वी हिमालय
   (c) हिमालय-उत्तराखंड हिमालय
   (d) काश्मीर हिमालय
3. निम्नलिखित में से कौन-सा मरुस्थल है? **M.P.P.C.S. (Pre) 2018**
   (a) सिंधु क्षेत्र (b) गंगा क्षेत्र
   (c) असम क्षेत्र (d) मध्य भारत क्षेत्र
4. मध्य प्रदेश का सर्वोच्च शिखर, धूपगढ़ स्थित है **M.P.P.C.S. (Pre) 2018**
   (a) सतपुड़ा श्रेणी में (b) महादेवी श्रेणी में
   (c) मैकाल श्रेणी में (d) विंध्यन श्रेणी में
5. भारत की दक्षिणतम पर्वतश्रेणी है- **M.P.P.C.S. (Pre) 2017**
   (a) नीलगिरि (b) अन्नामलाई
   (c) कार्डमम (d) नल्लामलाई
6. निम्नलिखित में से कौन-सी पर्वत शृंखला भारत में केवल एक राज्य में फैली है? **M.P.P.C.S. (Pre) 2017**
   (a) अरावली (b) सतपुड़ा
   (c) अजंता (d) सह्याद्रि

7. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है? **M.P.P.C.S. (Pre) 2017**
   (a) लिपुलेख-उत्तराखंड
   (b) नाथूला-अरुणाचल प्रदेश
   (c) रोहतांग-हिमाचल प्रदेश
   (d) पालघाट-केरल
8. निम्नलिखित में से दक्षिण भारत की सबसे ऊँची चोटी कौन-सी है? **M.P.P.C.S. (Pre) 2016**
   (a) अनाइमुडी (b) दोदाबेटा
   (c) गुरुशिखर (d) महेंद्रगिरि
9. किन दो पर्वत श्रेणियों के मध्य कश्मीर घाटी स्थित है? **M.P.P.C.S. (Pre) 2016**
   (a) लद्दाख व जास्कर
   (b) वृहद् हिमालय व पीरपंजाल
   (c) वृहत् हिमालय व जास्कर
   (d) काराकोरम व लद्दाख
10. कर्क रेखा गुज़रती है- **M.P.P.C.S. (Pre) 2014**
   (a) मध्य प्रदेश से (b) त्रिपुरा से
   (c) मिज़ोरम से (d) इन सभी से
11. नर्मदा घाटी उदाहरण है। **M.P.P.C.S. (Pre) 2014**
   (a) भ्रंश कगार का (b) भ्रंश घाटी का
   (c) ग्रीवाखंड का (d) हॉर्स्ट का
12. नर्मदा घाटी किन पर्वत शृंखलाओं के बीच स्थित है? **M.P.P.C.S. (Pre) 2014**
   (a) भांडेर और मैकाल
   (b) सतपुड़ा और अरावली
   (c) सतपुड़ा और विंध्याचल
   (d) विंध्याचल और अरावली
13. हिमालय की ऊँची चोटी कंचनजंगा कहाँ स्थित है? **M.P.P.C.S. (Pre) 2014**
   (a) कश्मीर (b) नेपाल
   (c) सिक्किम (d) हिमाचल प्रदेश
14. राष्ट्रीय एटलस और थिमेटिम मानचित्र संगठन स्थिति है: **M.P.P.C.S. (Pre) 2013**
   (a) देहरादून में (b) हैदराबाद में
   (c) नई दिल्ली में (d) कोलकाता में
15. नंदा देवी शिखर स्थित है-**M.P.P.C.S. (Pre) 2013**
   (a) हिमाचल प्रदेश में (b) उत्तराखंड में
   (c) उत्तर प्रदेश में (d) सिक्किम में
16. शिवालिक पहाड़ियाँ निम्नलिखित में से किसका हिस्सा हैं? **M.P.P.C.S. (Pre) 2013**
   (a) अरावली (b) पश्चिमी घाट
   (c) हिमालय (d) सतपुड़ा
17. हिमालय पर्वत श्रेणियाँ निम्नलिखित में से किस राज्य का हिस्सा नहीं हैं? **M.P.P.C.S. (Pre) 2012**
   (a) उत्तराखंड (b) उत्तर प्रदेश
   (c) सिक्किम (d) हिमाचल प्रदेश
18. महाबलेश्वर निम्नलिखित में से किस राज्य में स्थित है?
   (a) गुजरात (b) महाराष्ट्र
   (c) कर्नाटक (d) केरल
19. निम्नलिखित पर्वत चोटियों का पूर्व से पश्चिम की ओर सही क्रम है-
   (a) एवरेस्ट, कंचनजंगा, अन्नपूर्णा, मकालू
   (b) कंचनजंगा, मकालू, एवरेस्ट, अन्नपूर्णा
   (c) कंचनजंगा, एवरेस्ट, अन्नपूर्णा, धौलागिरि
   (d) एवरेस्ट, कंचनजंगा, धौलागिरि, मकालू
20. खनिज संसाधन की दृष्टि से भारत का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भौमिकीय क्रम है-
   (a) विंध्यन (b) दक्कन ट्रैप
   (c) धारवाड़ (d) बुंदेलखंड
21. भारत में कोयला उत्पन्न करने वाला भौमिकीय समूह है-
   (a) धारवाड़ (b) विंध्यन
   (c) गोंडवाना (d) कुडप्पा
22. भारत की सर्वाधिक प्राचीन पर्वत श्रेणी निम्नलिखित में से कौन-सी है?
   (a) हिमालय पर्वत श्रेणी
   (b) अरावली पर्वत श्रेणी
   (c) अन्नामलाई पर्वत श्रेणी
   (d) नल्लामलाई पर्वत श्रेणी

उत्तरमाला

1. (a)	2. (d)	3. (a)	4. (a)	5. (c)	6. (c)	7. (b)	8. (a)	9. (b)	10. (d)
11. (b)	12. (c)	13. (c)	14. (d)	15. (b)	16. (c)	17. (b)	18. (b)	19. (c)	20. (c)
21. (c)	22. (b)								

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर 10-20 शब्दों/एक या दो पंक्तियों में दीजिये)

1. विंध्याचल पर्वत श्रृंखला किन पर्वतों का समूह है? **M.P.P.C.S. (Mains) 2018**
2. मालाबार तट **M.P.P.C.S. (Mains) 2017**
3. बुंदेलखंड का पठार **M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
4. भारत की सबसे ऊँची चोटी के नाम **M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
5. पश्चिमी तटीय मैदान के उप-विभागों का नाम **M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
6. मध्य भारत के पठार **M.P.P.C.S. (Mains) 2014**
7. पश्चिमी घाट पर्वत के महत्त्वपूर्ण दर्रे
8. पूर्वी तटीय मैदान
9. अरावली पर्वत

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर 50 शब्दों या 5 से 6 पंक्तियों में दीजिये)

1. मालवा का पठार
2. द्वीप समूह
3. भारत के भौतिक विभाजनों का नाम
4. पूर्वी घाट
5. पीरपंजाल श्रेणी

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 100/200/300 शब्दों में दीजिये)

1. महान हिमालय या हिमाद्रि पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2017**
2. विंध्याचल-बघेलखंड पठार की भौगोलिक विशेषताओं पर टिप्पणी लिखिये। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2017**
3. मध्य प्रदेश को भौतिक प्रदेशों में विभक्त कीजिये तथा उनका विस्तृत विवरण दीजिये। **(300 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2017**
4. हिमालय देश का एक विशिष्ट भू-आकारिकी प्रदेश है, इसकी समानांतर श्रेणियों की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिये। **(300 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
5. प्रायद्वीपीय भारत की भू-आकृति का वर्णन करते हुए उसके भू-आकृति उपक्षेत्रों का विवरण दीजिये। **(300 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2016**
6. मालवा पठारी प्रदेशों का आर्थिक महत्त्व बताइये। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
7. भारत के उत्तर के विशाल मैदान का प्रादेशिक विभाजन कीजिये। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
8. मध्य भारत पठार की भौगोलिक स्थिति का विवरण दीजिये। **(100 शब्द) M.P.P.C.S. (Mains) 2015**
9. भारत की आर्कियन चट्टानों का वर्णन कीजिये।
10. पुराण समूह की चट्टानों का उल्लेख करें।
11. हिमालय पर्वत श्रेणी की उत्पत्ति की विवेचना कीजिये।
12. ट्रांस हिमालय की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करें।
13. प्रायद्वीपीय पठार की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिये।
14. पश्चिमी घाट एवं पूर्वी घाट का वर्णन करें।
15. पश्चिमी तटीय मैदान और पूर्वी तटीय मैदान में क्या अंतर है?

अध्याय
2

अपवाह तंत्र (Drainage System)

अपवाह तंत्र से तात्पर्य नदियों के उस तंत्र या जाल से है जिससे धरातलीय जल प्रवाहित होता है। नदी अपने क्षेत्र का जल ढाल के अनुरूप बहाकर ले जाती है तथा अंत में किसी झील, खाड़ी या समुद्र में जाकर मिल जाती है। एक नदी तंत्र द्वारा जिस क्षेत्र का जल प्रवाहित होता है उसे अपवाह द्रोणी कहते हैं। दो नदी द्रोणियों या अपवाह प्रदेशों को पृथक् करने वाली उच्चभूमि या पठारी या पर्वतीय भूमि जल विभाजक कहलाती है। भारत में मुख्य रूप से चार जल विभाजक हैं– 1. हिमालय पर्वत 2. अरावली पर्वत 3. सतपुड़ा महादेव मैकाल श्रेणी 4. पश्चिमी घाट पर्वत।

2.1 भारत का अपवाह तंत्र *(Drainage System of India)*

- भारतीय अपवाह तंत्र को भिन्न-भिन्न तरीकों से विभाजित किया जा सकता है। समुद्र में जल के प्रवाह के आधार पर भारत के स्थलीय भाग के लगभग 75% जल का बहाव बंगाल की खाड़ी में होता है तथा शेष जल का बहाव अरब सागर में होता है।
- भारत के अपवाह तंत्र को दिल्ली रिज, अरावली पर्वत शृंखला तथा सह्याद्रि द्वारा पृथक् किया जाता है। ये शृंखलाएँ जल विभाजक का कार्य करती हैं।
- भारत की बड़ी नदियों में गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी आदि शामिल हैं जो बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं, जबकि सिंधु, साबरमती, नर्मदा तथा ताप्ती का नदी तंत्र अरब सागर में अपवाहित होता है। भारत का अपवाह तंत्र यहाँ की स्थलाकृति पर निर्भर करता है।
- भारत का केवल कुछ प्रतिशत क्षेत्र ही अंतर्भूमि अपवाह के अंतर्गत आता है। जलक्षेत्र/बेसिन की आकृति के आधार पर भारतीय नदियों को तीन श्रेणियों में बाँटा जाता है–
  - ◆ जिन नदियों का जलागम या अपवाह क्षेत्र 20,000 वर्ग किमी. से अधिक होता है, **विशाल नदियाँ** कहलाती हैं। ऐसी 14 नदियाँ हैं जिन्हें भारी मात्रा में वर्षा जल की प्राप्ति होती है।
  - ◆ जो नदियाँ 2000 – 20,000 वर्ग किमी. तक जलागम या अपवाह क्षेत्र रखती हैं, **मध्यम नदियाँ** कहलाती हैं। इस श्रेणी में 44 नदियाँ आती हैं।
  - ◆ ऐसी नदियाँ जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 वर्ग किमी. से कम होता है, **लघु नदियाँ** कहलाती हैं। ऐसी नदियों की संख्या सर्वाधिक है।

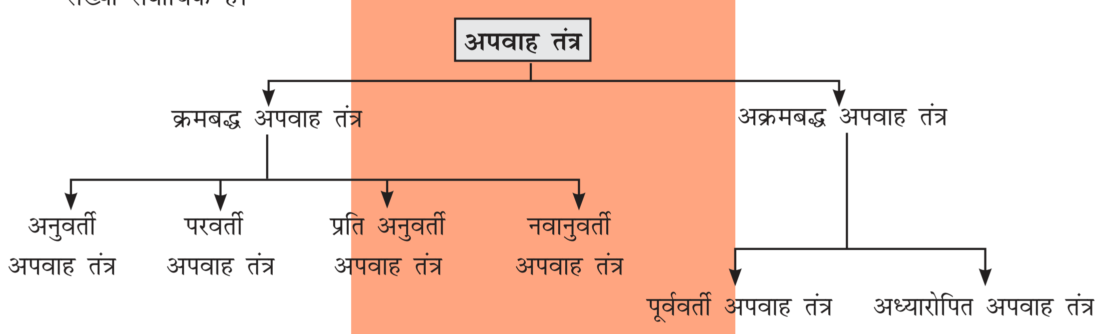

क्रमवर्ती अपवाह तंत्र *(Sequent drainage system)*

ऐसी नदियाँ जो ढाल का अनुसरण करती हैं, उनसे संबंधित अपवाह तंत्र को क्रमबद्ध अपवाह तंत्र कहा जाता है। क्रमबद्ध अपवाह तंत्र के निम्नलिखित प्रकार होते हैं–

अध्याय
3

भारत की जलवायु
(Climate of India)

किसी विस्तृत क्षेत्र में वर्ष की विभिन्न ऋतुओं की औसत मौसमी दशाओं को उस क्षेत्र की जलवायु कहा जाता है। किसी भी देश की जलवायु का विस्तृत अध्ययन करने के लिये उस स्थान के तापमान, वर्षा, वायुदाब तथा पवनों की गति एवं दिशा का ज्ञान होना आवश्यक होता है। जलवायु के इन विभिन्न तत्त्वों पर किसी देश के अक्षांशीय विस्तार, उच्चावच तथा जल व स्थल के वितरण का गहरा प्रभाव पड़ता है।

कर्क रेखा भारत जैसे विशाल देश को लगभग दो बराबर भागों में बाँटती है, इसलिये इसका दक्षिणी भाग उष्ण कटिबंध में और उत्तरी भाग शीतोष्ण कटिबंध में अवस्थित है। भारत की उत्तरी सीमा पर विशाल हिमालय पर्वत स्थित है। यह भारतीय उपमहाद्वीप को मध्य एशिया से अलग करता है और वहाँ से आने वाली शीत पवनों को रोकता है। इस प्रकार भारत के अधिकांश हिस्से में 'उष्णकटिबंधीय जलवायु पाई जाती है। भारत के दक्षिण में स्थित हिंद महासागर से आने वाली मानसूनी पवनों का भारत की जलवायु पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। इसलिये भारत की जलवायु को उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु' कहा जाता है।

'मानसून' शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के शब्द 'मौसिम' से हुई है, जिसका तात्पर्य मौसम (ऋतु) से है। 'मानसून' शब्द का अर्थ एक वर्ष के दौरान के वायु की दिशा में ऋतु के अनुसार परिवर्तन है। मानसूनी पवनें वे पवनें हैं, जिनकी दिशा ऋतु के अनुसार बिल्कुल उलट जाती है। ये पवनें ग्रीष्म ऋतु के छः माह समुद्र से स्थल की ओर तथा शीत ऋतु के छः माह स्थल से समुद्र की ओर चलती हैं। भारतीय जलवायु-विज्ञान के पूर्व उप-महानिदेशक डॉ. रामा शास्त्री के अनुसार मानसून बड़े पैमाने पर विस्तृत क्षेत्र में चलने वाली मौसमी पवनें हैं, जिनकी दिशा का मौसम में परिवर्तन के साथ उत्क्रमण हो जाता है।

भारत की जलवायु आमतौर पर उष्णकटिबंधीय है। यहाँ चार ऋतुएँ होती हैं। भारत की जलवायु पर दो प्रकार की मौसमी हवाओं का प्रभाव पड़ता है- पूर्वोत्तर मानसून और दक्षिण-पश्चिमी मानसून। पूर्वोत्तर मानसून को आमतौर पर 'शीत मानसून' कहा जाता है। इस दौरान हवाएँ स्थल से समुद्र की ओर बहती हैं, जो हिंद महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी को पार करके आती हैं। दक्षिण-पश्चिमी मानसून के दौरान हवाएँ समुद्र से स्थल की ओर चलती हैं। भारत में अधिकांश वर्षा दक्षिण-पश्चिमी मानसून से होती है।

3.1 भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक
(Factors Affecting Climate of India)

किसी भी क्षेत्र की जलवायु को नियंत्रित करने में निम्नलिखित छः कारक प्रमुख भूमिका निभाते हैं-

- अक्षांश
- तुंगता (ऊँचाई)
- वायुदाब एवं पवनतंत्र
- समुद्र से दूरी
- महासागरीय धाराएँ
- उच्चावच

पृथ्वी गोलाभ (Geoid) है। इसलिये इसके विभिन्न अक्षांशों पर सूर्यातप की मात्रा अलग-अलग होती है। विषुवत् रेखा पर तापमान अधिक होता है जबकि ध्रुवों पर तापमान बहुत कम होता है। पृथ्वी की सतह से ऊँचाई के साथ-साथ तापमान में कमी होती जाती है। यही कारण है कि पहाड़ियों पर तापमान हमेशा कम होता है। किसी भी क्षेत्र का वायुदाब एवं पवनतंत्र उस क्षेत्र के अक्षांश एवं ऊँचाई पर निर्भर करता है और वहाँ के तापमान एवं वर्षा को प्रभावित करता है। समुद्र से दूरी का जलवायु पर समकारी प्रभाव कम होता जाता है। महासागरीय धाराएँ तटीय क्षेत्रों की जलवायु को प्रभावित करती हैं। उच्चावच भी किसी स्थान की जलवायु को निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऊँचे पर्वत ठंडी अथवा गर्म हवा को रोककर उस क्षेत्र में बारिश या सूखे का कारण बनते हैं। पर्वतों के पवनाभिमुखी ढाल अपेक्षाकृत सूखे रहते हैं।

भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं-

अध्याय
4

भारत की प्राकृतिक वनस्पतियाँ
(Natural Vegetations of India)

पौधों के समूह को वनस्पति कहते हैं। प्राकृतिक वनस्पति में केवल वे पौधे ही सम्मिलित किये जाते हैं, जो मानव की सहायता के बिना जंगली अवस्था में उगते हैं अर्थात् विभिन्न पर्यावरणीय तथा पारितंत्रीय परिवेश में जो वनस्पति प्राकृतिक रूप से उगती है, उसे ही प्राकृतिक वनस्पति कहा जाता है। भारत में जलवायु एवं उच्चावच की दृष्टि से काफी विविधता पाई जाती है। यही कारण है कि भारत के विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों में विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति का विकास हुआ है। भारत में पठारी एवं मैदानी क्षेत्रों की वनस्पति पर वर्षा का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है, जबकि पर्वतीय क्षेत्र की वनस्पति पर ऊँचाई व तापमान का प्रभाव अधिक है। वनस्पतियों की इस विभिन्नता के अन्य कारण निम्नलिखित हैं-

- अक्षांशीय विस्तार
- भारत का वृहत् भौगोलिक आकार
- स्थलाकृतिक विविधता
- लंबी तट रेखा
- जलवायविक विविधता
- वृहत् क्षेत्र पर समुद्री वातावरण

4.1 प्राकृतिक वनस्पतियों के प्रकार *(Types of Natural Vegetations)*

भारत में जलवायु व उच्चावच की दृष्टि से काफी विविधता पाई जाती है। यही कारण है कि भारत के विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों में विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति का विकास हुआ है। भारत में पठारी एवं मैदानी क्षेत्रों की वनस्पति पर वर्षा का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है जबकि पर्वतीय क्षेत्र की वनस्पति पर ऊँचाई व तापमान का प्रभाव अधिक है। प्रमुख वनस्पतियों के प्रकार, जलवायु तथा पारिस्थितिकी के आधार पर भारतीय प्राकृतिक वनस्पति का निम्नलिखित रूप में वर्गीकरण किया गया है-

प्राकृतिक वनस्पति का वर्गीकरण

- उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनस्पति
- उष्णकटिबंधीय आर्द्र मानसूनी वनस्पति
- उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनस्पति
- मरुस्थलीय तथा अर्द्ध-मरुस्थलीय वनस्पति
- ज्वारीय या डेल्टाई वनस्पति
- हिमालय पर्वतीय वनस्पति
- प्रायद्वीपीय वनस्पति
- घास वनस्पति

उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनस्पति *(Tropical evergreen vegetation)*

- ये वनस्पति उन क्षेत्रों में पाई जाती हैं जहाँ 200 सेमी. से अधिक वर्षा होती है।
- तापमान वर्ष भर उच्च रहता है।
- अत्यधिक वर्षा होने के कारण ये वृक्ष काफी सघन एवं सदाहरित होते हैं।
- वृक्षों की लकड़ियाँ काफी कठोर होती हैं।
- लकड़ियाँ कठोर होने के कारण ये वन आर्थिक दृष्टि से कम महत्त्वपूर्ण होते हैं।
- यह प्राकृतिक वनस्पति, जैव-विविधता एवं पारिस्थितिकीय दृष्टि से पर्याप्त महत्त्व रखते हैं।
- महत्त्वपूर्ण वृक्ष हैं- रबड़, महोगनी, आबनूस, लौह काष्ठ, ताड़, बाँस, सिनकोना, आर्किड, नारियल इत्यादि।
- पश्चिमी घाट, प्रायद्वीपीय भारत के अरब सागर के तट का क्षेत्र, भारत का उत्तर-पूर्वी प्रदेश तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के क्षेत्रों में इस प्रकार की वनस्पति पाई जाती है।

अध्याय
5

भारत की मृदा
(Soil of India)

भारत एक विशाल देश है जहाँ विभिन्न प्रकार की मृदाएँ पाई जाती हैं। भारत की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि है एवं कृषि व्यवस्था तब सुव्यवस्थित होगी जब मृदा उपजाऊ एवं सुविकसित होगी। मृदा हमारे जीवन के लिये बहुत ही मूल्यवान तत्त्व है जो हमें प्रकृति से प्राप्त हुई है। मृदा से हमें वनस्पति तथा कृषि उत्पाद प्राप्त होते हैं। मृदा की उपजाऊ शक्ति तथा उसकी गहराई पर किसी भी क्षेत्र की आर्थिक व्यवस्था निर्भर करती है। भारत में मृदाओं का स्वरूप एक जैसा नहीं है इसका मुख्य कारण यहाँ की स्थलाकृति, वनस्पति व जलवायु में भिन्नता का पाया जाना है। भारत के दक्कन क्षेत्र में काली मृदा की बहुलता है तो मध्य भारत में लाल-पीली मृदा की। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत का मृदा संगठन एक जैसा नहीं है।

5.1 मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुण
(Physical, Chemical and Biological Properties of Soil

मृदा के भौतिक गुण *(Physical properties of soil)*

मृदा के भौतिक गुण पौधों की बढ़ने की क्षमता को प्रभावित करते हैं तथा पौधों को जमीन के साथ जोड़े रखने के लिये अत्यंत आवश्यक होते हैं। इसके साथ ही जल का अवशोषण एवं निष्कासन, वातन, नमी की प्रतिधारण तथा पोषक तत्त्वों आदि का पौधे के विभिन्न भागों तक संवहन के लिये मृदा महत्त्वपूर्ण है।

मृदा के भौतिक गुण काफी हद तक इसके रासायनिक एवं जैविक गुणों को प्रभावित करते हैं। मृदा के भौतिक गुण इसके कणों के आकार, मात्रा, आंतरिक व्यवस्था एवं खनिज संरचना आदि पर निर्भर करता है। इसके भौतिक गुणों में शामिल हैं-

- मृदा संरचना (Soil Structure)
- मृदा रंग (Soil Color)
- मृदा घनत्व (Soil Density)
- मृदा की बनावट (Soil Texture)
- मृदा संगतता (Soil Consistence)
- मृदा परिच्छेदिका (Soil Profile)

मृदा की बनावट (Soil texture)

मृदा की बनावट मृदा की सबसे महत्त्वपूर्ण भौतिक गुण है। यह मिट्टी की पोषक तत्त्वों एवं पानी धारण करने की क्षमता को प्रभावित करती है। मिट्टी की बनावट अलग-अलग आकार के ठोस घटक कणों के अनुपात पर निर्भर करती है। मृदा में रेत, गाद और चिकनी मिट्टी के सापेक्ष संयोजन इसकी बनावट को परिभाषित करता है। यह मृदा की एक स्थायी गुण है, इसलिये मिट्टी के वर्गीकरण और विवरण में इसका उपयोग किया जाता है।

रेत के कण सबसे बड़े होते हैं और चिकनी मिट्टी के सबसे छोटे। रेत के कणों का आकार 0.05 मिमी. से 2 मि.मी के बीच होता है, गाद के कणों का आकार 0.002 मि.मी. से 0.5 मि.मी के बीच होता है जबकि चिकनी मिट्टी के कणों का आकार 0.002 मिमी. से कम होता है।

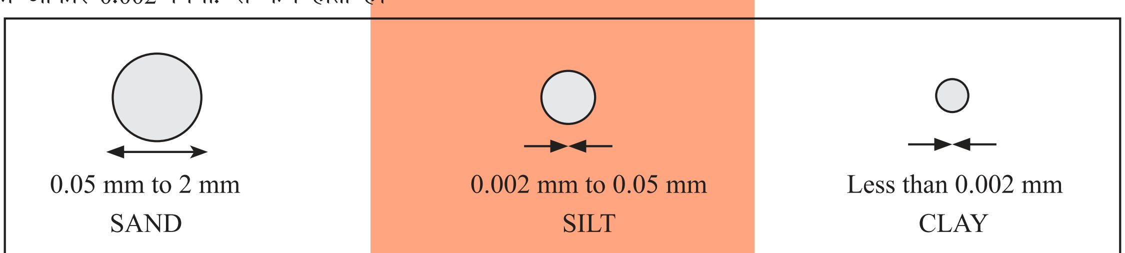

अध्याय
6

भारतीय कृषि व्यवस्था (Indian Agricultural System)

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। भारतीय जीवन का आधार, रोज़गार का प्रमुख स्रोत तथा विदेशी मुद्रा अर्जन करने का माध्यम होने के कारण कृषि को देश की अर्थव्यवस्था का आधार कहा जाता है। यहाँ की लगभग दो-तिहाई आबादी कृषि पर आश्रित है। भारत के कुल क्षेत्रफल के लगभग 60.4% भाग पर कृषि कार्य होता है जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका के 44.63%, जापान के 12.4%, चीन के 54.8% एवं कनाडा के केवल 7.2% क्षेत्रफल पर कृषि कार्य होता है।

भारत की कृषि को प्रभावित करने वाले कारक				
भौतिक कारक	**संस्थागत कारक**	**संरचनात्मक कारक**	**राजनीतिक कारक**	**तकनीकी कारक**
इसके अंतर्गत जलवायु की दशाओं को शामिल किया जाता है, जैसे- तापमान, वर्षा, आर्द्रता, मिट्टी, उच्चावच।	संस्थागत कारक के अंतर्गत निम्न क्षेत्रों को शामिल किया जाता है, जैसे- चकबंदी, बिचौलियों का अंत, इत्यादि।	इसके अंतर्गत कृषि में आधुनिकता एवं उत्पादकता बढ़ाने वाले तकनीकी उपकरण, कृषि शोध एवं विज्ञान आधारित निवेश को शामिल किया जाता है।	कृषि क्षेत्र में राजनीतिक, प्रशासनिक प्रयास का योगदान हमेशा होता है, जैसे- न्यूनतम समर्थन मूल्य, ऋण प्रवाह, विपणन व भंडारण की संरचना एवं विकास इत्यादि।	वर्तमान समय में कृषि को प्रभावित करने वाले प्रमुख तकनीकी कारक हैं, जैसे- कृषि उपज भंडारण, ई-चौपाल, किसान कॉल सेंटर इत्यादि से कृषि उत्पादकता को एक नया आधार मिला है।

भारतीय कृषि क्षेत्र: समस्या और उपाय

प्रगति के सुनहरे अतीत पर खड़ा भारतीय कृषि क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था में सदैव ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। भारत में विश्व का 10वाँ सबसे बड़ा कृषि योग्य भू-संसाधन मौजूद है। वर्ष 2011 की कृषि जनगणना के अनुसार, देश की कुल जनसंख्या का 61.5 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण भारत में निवास करता है और कृषि पर निर्भर है। उक्त तथ्य भारत में कृषि के महत्त्व को भलीभांति स्पष्ट करते हैं। वर्ष 2019 में देश के कृषि क्षेत्र में कई प्रकार के हस्तक्षेप और व्यवधान देखे गए। वर्ष 2019 के पहले हिस्से में 75000 करोड़ रुपए के रिकॉर्ड निवेश के साथ प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN) योजना की शुरुआत की गई। हालाँकि वर्ष 2019 का दूसरा हिस्सा इस क्षेत्र के लिये आपदा के रूप में सामने आया और देश के कई हिस्सों में सूखे और बाढ़ की घटनाएँ देखी गईं। इसके अलावा आर्थिक मंदी और सब्जियों खासकर प्याज तथा दालों की कीमतों में वृद्धि ने उपभोक्ताओं (जिसमें किसान भी शामिल हैं) पर बोझ को और अधिक बढ़ा दिया। यह स्थिति मुख्यत: दो तथ्यों को स्पष्ट करती है:

- लोकलुभावन उपायों और प्रयासों का अर्थव्यवस्था पर कुछ खास प्रभाव नहीं पड़ रहा है और
- जलवायु-प्रेरित आपदाओं की भेद्यता (Vulnerability) को कम करने के कई उपायों के बावजूद कृषि क्षेत्र और किसानों को नुकसान हो रहा है।

इस प्रकार कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिये आवश्यक है कि नीति निर्माण के समय अतीत के अनुभवों को ध्यान में रखा जाए और मौजूदा अवसरों का यथासंभव लाभ उठाया जाए।

भारत में कृषि की मौजूदा स्थिति

- हाल ही में जारी आर्थिक सर्वेक्षण 2019-20 के अनुसार भारतीय आबादी का एक बड़ा हिस्सा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अन्य क्षेत्रों की तुलना में रोजगार अवसरों के लिये कृषि क्षेत्र पर अधिक निर्भर है।
- आँकड़ों के मुताबिक देश में चालू कीमतों पर सकल मूल्यवर्द्धन (GVA) में कृषि एवं सहायक क्षेत्रों का हिस्सा वर्ष 2014-15 के 18.2 प्रतिशत से गिरकर वर्ष 2019-20 में 16.5 प्रतिशत हो गया है, जो कि विकास प्रक्रिया का स्वभाविक परिणाम है।

अध्याय
7

भारत का आर्थिक भूगोल (Economic Geography of India)

आर्थिक भूगोल, मानव भूगोल की एक प्रमुख शाखा है, जिसमें भूतल पर मानवीय आर्थिक क्रियाओं में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पाई जाने वाली विभिन्नता का अध्ययन किया जाता है। अर्थात् इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार की आर्थिक क्रियाओं के वितरण प्रतिरूपों तथा उन कारकों एवं प्रक्रमों का अध्ययन किया जाता है जो भूतल पर इन प्रतिरूपों की क्षेत्रीय विभेदनशीलता को प्रभावित करते हैं। आर्थिक भूगोल में मृदा, जल, जैव तत्त्व, खनिज, ऊर्जा आदि प्राकृतिक संसाधनों, आखेट, मत्स्यपालन, पशुपालन, वनोद्योग, कृषि, विनिर्माण उद्योग, परिवहन, संचार, व्यापार, वाणिज्य आदि आर्थिक क्रियाओं तथा अन्य आर्थिक पक्षों एवं संगठनों के अध्ययन को सम्मिलित किया जाता है।

7.1 प्राकृतिक संसाधन एवं उनका वितरण *(Natural Resources and Their Distribution)*

प्राकृतिक संसाधन *(Natural resource)*

प्रकृति द्वारा प्रदत्त वे संसाधन जिनका उपयोग संपूर्ण जीव अपनी आवश्यकताओं तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिये करता है, 'प्राकृतिक संसाधन' कहलाते हैं। ये संसाधन मनुष्य को प्रकृति द्वारा निःशुल्क प्राप्त होते हैं। जैसे- मृदा, जल, वायु, वन, खनिज आदि।

उपयोग की निरंतरता के आधार पर प्राकृतिक संसाधनां को दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया है।

प्राकृतिक संसाधन	
नवीकरणीय संसाधन अथवा असमाप्य संसाधन	**अनवीकरणीय संसाधन अथवा समाप्य संसाधन**
ये असीमित मात्रा में पाए जाते हैं व समाप्त होने पर भौतिक, यांत्रिक तथा रासायनिक क्रियाओं द्वारा इनका पुनः उत्पादन संभव है। उदाहरण- वायु, जल।	ये बहुत सीमित मात्रा में पाए जाते हैं और एक बार प्रयोग होने के बाद इनकी पुनः पूर्ति नहीं हो सकती। उदाहरण- खजिन संसाधन (जैसे- कोयला, पेट्रोलियम)।

भूमि संसाधन *(Land resources)*

सभी प्राकृतिक संसाधनों में भूमि सबसे प्रमुख और आधारभूत संसाधन है, क्योंकि अन्य सभी संसाधनों की उत्पत्ति और विकास भूमि पर ही होता है। भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 32.87 लाख वर्ग किमी. है, अतः हमारे देश में पर्याप्त मात्रा में भू-संसाधन हैं। यहाँ विभिन्न प्रकार की भू-आकृतियाँ जैसे- पर्वत, पठार, मैदान और द्वीप पाए जाते हैं। देश के भू-क्षेत्र का लगभग 43 प्रतिशत मैदानी है। पर्वत पूरे भू-क्षेत्र के 30 प्रतिशत भाग पर विस्तृत हैं। ये कुछ सदानीरा नदियों के स्रोत होने के साथ-साथ पारिस्थितिकी के लिये भी महत्त्वपूर्ण है और पर्यटन उद्योग के लिये अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध कराते हैं। देश के क्षेत्रफल का लगभग 27 प्रतिशत भाग पठारी है। इस क्षेत्र में खनिज, जीवाश्म ईंधन और वन प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

भारत में भूमि-उपयोग प्रारूप (Land-use format in India)

भू-उपयोग को निर्धारित करने वाले कारकों में भौतिक कारक जैसे- भू-आकृति, जलवायु और मृदा के प्रकार तथा मानवीय कारक जैसे जनसंख्या घनत्व, प्रौद्योगिक क्षमता, संस्कृति और परंपराएँ इत्यादि शामिल हैं।

भारत में भूमि के 93 प्रतिशत भाग के उपयोग संबंधी आँकड़े उपलब्ध हैं क्योंकि पूर्वोत्तर क्षेत्रों में असम के अलावा अन्य प्रांतों के सूचित क्षेत्र के बारे में जानकारी उपलब्ध नहीं है। जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तान और चीन अधिकृत क्षेत्रों में भूमि सर्वेक्षण भी नहीं हुआ है।

अध्याय
8

उद्योग एवं औद्योगिक प्रदेश (Industry and Industrial Regions)

किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिये औद्योगिक विकास अति आवश्यक है। कच्चे माल को निर्मित वस्तुओं में परिवर्तित करने की क्रिया को विनिर्माण उद्योग कहा जाता है। प्राचीन काल से ही भारत अपने कुटीर उद्योग, शिल्प तथा वाणिज्य उद्योग के लिये विश्व प्रसिद्ध रहा है। भारतीय मलमल, सूती एवं रेशमी वस्त्र, कलात्मक वस्तुएँ आदि की विश्व में काफी मांग थी, किंतु औद्योगिक क्रांति के पश्चात् भारतीय परंपरागत उद्योगों को काफी हानि हुई। औपनिवेशिक शासन की विनिर्मित सामान को आयात करने तथा कच्चे माल को निर्यात करने की प्रोत्साहन नीति ने भारत के परंपरागत उद्योगों की रीढ़ तोड़ दी। यह महसूस किया गया कि औद्योगिक विकास ही एक ऐसा माध्यम है जो हमें आर्थिक उन्नति के पथ पर अग्रसर होने में सहायता कर सकता है। परिणामस्वरूप योजनाबद्ध कार्यक्रम आरंभ किया गया और पंचवर्षीय योजनाओं में उद्योगों के विकास पर ज़्यादा ध्यान दिया जाने लगा।

एक विशाल क्षेत्र में विभिन्न उद्योगों के संकेंद्रण से विकसित औद्योगिक भू-दृश्य को औद्योगिक प्रदेश कहा जाता है। इसमें कोई आधारभूत उद्योग नहीं होता है। अधिकांशतः उद्योग स्वतंत्र अस्तित्व के होते हैं। इसमें औद्योगिक श्रमिकों के निवास के लिये कॉलोनियों और औद्योगिक सामानों के लिये कई छोटे-बड़े कस्बों का उद्‌भव होता है। इस क्षेत्र में आनुषंगिक इकाइयों की स्थापना से औद्योगिक संकुल का निर्माण होता है।

8.1 भारत में औद्योगिक विकास *(Industrial Development in India)*

भारत में औद्योगिक विकास के कालखंड को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

(i) स्वतंत्रता पूर्व भारत में औद्योगिक विकास

(ii) स्वतंत्रता पश्चात् भारत में औद्योगिक विकास

स्वतंत्रता पूर्व भारत में औद्योगिक विकास

प्राचीन काल से ही भारत अपने सूती वस्त्रों, रेशमी वस्त्रों, मलमल तथा अन्य कलात्मक वस्तुओं के लिये विश्व प्रसिद्ध था, लेकिन इसके बाद वर्ष 1854 में प्रथम सफल प्रयास के रूप में **कावसजी नानाभाई डाबर** द्वारा मुंबई (तत्कालीन बॉम्बे) में सूती मिल की स्थापना की गई। सन् 1855 में कोलकाता के पास 'रिशरा' में जूट मिल की स्थापना के साथ ही भारत में आधुनिक उद्योगों का प्रारंभ हुआ।

स्वतंत्रता पश्चात् भारत में औद्योगिक विकास

- स्वतंत्रता के समय भारत का औद्योगिक विकास मुख्य रूप से उपभोक्ता वस्तुओं तक ही सीमित था एवं ज़्यादातर उद्योग घटती मांग, मुद्रास्फीति, पुरानी मशीनों, आधुनिकीकरण की कमी एवं कच्चे माल की कमी की समस्या से ग्रसित थे, फलतः स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् तत्कालीन केंद्रीय उद्योग मंत्री डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा 6 अप्रैल, 1948 को देश की 'प्रथम औद्योगिक नीति' की घोषणा की गई।
- इस नीति के द्वारा सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के रूप में देश के उद्योगों का बँटवारा किया गया तथा एक मिश्रित एवं नियंत्रित अर्थव्यवस्था की नींव रखी गई।
- 30 अप्रैल, 1956 को देश में 'दूसरी औद्योगिक नीति' की घोषणा की गई। इसके तहत उद्योगों को निजी, सार्वजनिक तथा संयुक्त क्षेत्रों में विभाजित किया गया तथा अवशिष्ट उद्योगों को निजी उद्यम के लिये खुला छोड़ दिया गया।

अध्याय
9

भारत में परिवहन (Transport in India)

किसी देश की सतत् आर्थिक संवृद्धि में बेहतर ढंग से संबद्ध परिवहन प्रणाली अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत के निरंतर विकास में सुचारु परिवहन प्रणाली का महत्त्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान में भारत की परिवहन प्रणाली में यातायात के विभिन्न माध्यमों को शामिल किया गया है, इनमें प्रमुख हैं- सड़क परिवहन, रेल परिवहन, वायु परिवहन, तटीय नौ संचालन इत्यादि। पिछले कुछ वर्षों में परिवहन प्रणाली के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति के साथ इसकी क्षमता भी बढ़ी है। परिवहन देश की आधारिक संरचना का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है क्योंकि यह कृषि व औद्योगिक विकास के साथ सामाजिक जीवन पर भी प्रभाव डालता है।

9.1 सड़क परिवहन *(Road Transport)*

देश के आर्थिक विकास के लिये सड़क परिवहन महत्त्वपूर्ण अवसंरचना है। सड़क परिवहन ने भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह विकास की गति, संरचना व पद्धति को प्रभावित करता है।

- भारत में सड़क अवसंरचना का उपयोग 69% माल ढुलाई तथा 90% यात्री परिवहन में होता है।
- सड़कों के निर्माण से ग्रामीण विकास की प्रक्रिया तीव्र हुई है। कृषकों का संबंध बाज़ार से बढ़ा है, जिससे उत्पादन आधिक्य की घरेलू बाज़ार से लेकर अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार तक पहुँच सुनिश्चित हुई है। इससे कृषकों में व्यावसायिक प्रवृत्ति का विकास होने के कारण उनकी आय बढ़ाने में भी सफलता मिली है।
- भारत में औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने साधनों की गतिशीलता में वृद्धि की है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों के निर्माण से औद्योगिक मांग की वस्तुओं के परिवहन में कुशलता बढ़ी है।
- परिवहन के विकास के कारण लोगों में गतिशीलता बढ़ी है।
- वर्तमान में भारत में कुल सड़कों की लंबाई 56.17 लाख किमी. है, जो कि विश्व का दूसरा सबसे बड़ा रोड नेटवर्क है।
- भारत में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास के लिये ज़िम्मेदार होता है।
- भारत में सड़कों के निम्नलिखित प्रकार हैं-

सड़कों के प्रकार

राष्ट्रीय राजमार्ग | प्रांतीय राजमार्ग | ज़िला सड़कें | ग्रामीण सड़कें

राष्ट्रीय राजमार्ग *(National highway)*

- भारत में राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लंबाई 132500 किमी. है।
- राष्ट्रीय राजमार्ग, कुल सड़क मार्ग का मात्र 2.06% है, लेकिन 40% यातायात इन्हीं राजमार्गों से होता है।

प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग

राष्ट्रीय राजमार्ग	अवस्थित
राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-1	दिल्ली से अटारी (इंडो-पाक बॉर्डर) तक
राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-2	दिल्ली से कोलकाता (वाया- मथुरा, आगरा, कानपुर, इलाहाबाद, मोहनिया, बरही, पलसित)

अध्याय
10

भारत में खाद्य-प्रसंस्करण एवं संबंधित उद्योग
(Food Processing and Related Industries in India)

भारत एक कृषि प्रधान देश है। इसकी अर्थव्यवस्था का आधार कृषि को माना जाता है। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था होने के बावजूद यहाँ किसानों की आय में पर्याप्त वृद्धि नहीं हो पाती क्योंकि पर्याप्त फसल होने पर भी किसानों को उचित मूल्य नहीं मिल पाता है, जिसका एक प्रमुख कारण भारत में कृषिजन्य खाद्य एवं अखाद्य उत्पादों के प्रसंस्करण की उचित व्यवस्था का न होना है। यदि इस दिशा में प्रयास किये जाएँ तो लघु एवं कुटीर प्रसंस्करण उद्योग, कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्द्धन से बेहतर आय अर्जित करने में किसानों की मदद कर सकते हैं। यह उद्योग ग्रामीण आत्मनिर्भरता एवं रोज़गार सृजन के मामले में परिवर्तन का कारक बन सकता है, साथ ही गाँव एवं शहर के बीच की खाई को भी पाट सकता है तथा कृषि के तौर-तरीकों में सुधार ला सकता है।

खाद्य प्रसंसकरण का तात्पर्य खाद्य एवं उद्योग द्वारा प्राथमिक कृषि उत्पादों, पौधों एवं पशुओं से जुड़ी सामग्रियों जैसे- अनाज, माँस दूध आदि को उपभोक्ताओं के उपयोग योगय बनाने से है। भारत का खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र उत्पादन, वृद्धि, खपत और निर्यात की दृष्टि से सबसे बड़ा क्षेत्र है। भारत के खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में फल एवं सब्जियाँ, मसाले, माँस तथा पोल्ट्री, दूध एवं दूध उत्पाद, मदिरा, मत्स्य उद्योग, वृक्षारोपण अनाज प्रसंस्करण एवं उपभोक्ता उत्पाद समूह जैसे मिष्ठान, चॉकलेट और कोको उत्पाद, सोया आधारित उत्पादन, मिनरल वाटर, उच्च प्रोटीन खाद्य आदि शामिल हैं। अगस्त 1991 में उदारीकरण के बाद खाद्य और कृषि-प्रसंस्करण क्षेत्र संबंध में विभिन्न परियोजनाओं को लाने का प्रस्ताव है। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा निवेश को ध्यान में रखते हुए संयुक्त उपक्रम, विदेशी सहयोग, औद्योगिक लाइसेंस एवं 100% निर्यात उन्मुख इकाइयों के प्रस्ताव स्वीकृत किये गए हैं। इसमें 10,000 करोड़ रुपए से अधिक का विदेशी निवेश शामिल है।

- वर्ष 2018–19 में भारत का प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात 31111.90 करोड़ रुपए था।
- भारतीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मुख्यत: निर्यात उन्मुख है। भारत की भौगोलिक स्थिति इसे यूरोप, मध्य एशिया, जापान, सिंगापुर, थाईलैंड, मलेशिया एवं कोरिया से संपर्क की अद्वितीय सुविधा प्रदान करती है।
- भारत विश्व में कृषि संबंधी सह उत्पादों के प्रमुख उत्पादक के रूप में जाना जाता है। वर्तमान में भारत का दूध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान रहा है।
- विश्व में 72 प्रतिशत से अधिक खाद्य की बिक्री सुपर स्टोर्स के माध्यम से होती है।
- भारत में काफी संभावनाएँ है एवं एक बेड़ खुदरा व्यापार परिवर्तन के लिये अनुकूल स्थिति है।
- भारत में संगठित खुदरा क्षेत्र छोटा होने के साथ सभी विश्व बाजारों में भारत काफी संभावना से भरा है एवं सभी विश्व बाजारों से कम प्रतिस्पर्धा भी है।

10.1 स्थान निर्धारण, पूर्ववर्ती एवं अग्रवर्ती आवश्यकताएँ
(Localisation, Upstream and Downstream Requirements)

खाद्य-प्रसंस्करण उद्योग के अंतर्गत कृषि उत्पादों को उपभोग योग्य बनाए रखने एवं उनकी मार्केटिंग का कार्य आता है। उत्पादन, खपत, निर्यात और विकास के आधार पर यह उद्योग भारत का महत्त्वपूर्ण उद्योग है।

स्थान निर्धारण *(Localisation)*

भारत में खाद्य-प्रसंस्करण से संबंधित अधिकतर कारखानें तटीय राज्यों जैसे- आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, गुजरात तथा पश्चिम बंगाल में अवस्थित हैं। हालाँकि कुछ कृषि प्रधान राज्यों जैसे- पंजाब, उत्तर प्रदेश आदि में भी इस उद्योग की इकाइयाँ अवस्थित हैं।

अध्याय
11

जनांकिकीय व्यवस्था (Demographic System)

जनसंख्या के वैज्ञानिक और व्यवस्थित अध्ययन को जनांकिकीय कहा जाता है। जनगणना से केवल स्थान विशेष में कुल कितने व्यक्ति रहते हैं, का पता चलता है लेकिन जनांकिकीय के अध्ययन के आधार पर विभिन्न लैंगिक वर्गों, भौगोलिक क्षेत्रों तथा अन्य सभी तुलनात्मक क्षेत्रों में जनसंख्या को वर्गीकृत कर सकते हैं। जनांकिकीय व्यवस्था के आधार पर ही जनसंख्या के गुणात्मक स्तर का पता चलता है, साथ ही भविष्य के लिये नीति बनाने में भी मदद मिलती है।

11.1 भारत की जनांकिकीय व्यवस्था की विशेषताएँ *(Characteristics of India's Demographic System)*

- भारत की जनांकिकीय व्यवस्था की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-
  - अधिक जनसंख्या
  - ग्रामीण जनसंख्या की अधिकता
  - उच्च जनसंख्या वृद्धि दर
  - निम्न लिंगानुपात
  - अधिक निर्भरता की स्थिति
  - नृजातीय विविधता
  - वृद्धि के परिणाम

अधिक जनसंख्या *(Excess population)*

- किसी देश की अनुकूलतम जनसंख्या उसे कहा जाता है जो उसके अधिकतम या संपूर्ण संसाधनों का अधिक-से-अधिक दोहन कर सकने वाली न्यूनतम जनसंख्या हो।
- वैश्विक तुलनात्मक दृष्टि से भारत का क्षेत्रफल लगभग **2.4%** है लेकिन यहाँ पर कई गुणा अधिक जनसंख्या है।
- एक अनुमान के अनुसार 2025–2050 के बीच भारत की जनसंख्या चीन से भी अधिक हो जाएगी क्योंकि चीन की जनसंख्या वृद्धि दर 1% है जबकि भारत की औसत वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 1.64% है।
- इस स्थिति में भारत की जनसंख्या 34 वर्षों में दोगुनी हो जाएगी, जबकि चीन की जनसंख्या 60 वर्षों में दोगुनी होगी।
- भारत में जनसंख्या अधिक होने के कारणों में मृत्यु-दर की तुलना में जन्म-दर का अधिक होना, कम उम्र में विवाह करने की सामाजिक मान्यता, धार्मिक अंधविश्वास, निरक्षरता की अधिकता, जनसंख्या नियंत्रण के लिये उपयुक्त वैज्ञानिक सुविधाओं का अभाव, पुत्र प्राप्ति की प्रबल चाह आदि जैसी प्रमुख समस्याएँ हैं।

ग्रामीण जनसंख्या की अधिकता *(Excess of rural population)*

- भारत में 2011 की जनगणना के आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों की **आबादी 68.9%** है, जबकि 31.1% जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है।
- नगरीय क्षेत्रों में कम-से-कम तीन-चौथाई लोग द्वितीयक या तृतीयक क्षेत्र पर निर्भर होते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश लोग प्राथमिक क्षेत्रों पर निर्भर होते हैं।

अध्याय
12

भारतीय राज्य एवं उनकी स्थलीय सीमाएँ (Indian State and its Terrestrial Borders)

भारत हिंद महासागर के उत्तरी सिरे पर पूर्वी गोलार्द्ध के मध्य में स्थित एक विशाल देश है। इसकी विशालता के कारण ही इसे उपमहाद्वीप की संज्ञा दी जाती है। आर्यावर्त एवं जंबूद्वीप इसके प्राचीन नाम हैं। ईरानियों ने इसे 'हिंदुस्तान' तथा यूनानियों ने इसे 'इंडिया' कहा।

सम्राट भरत के नाम पर इसका नाम भारतवर्ष पड़ा अंततः भारतीय संविधान के अनुच्छेद-1 में इसे भारत अर्थात् 'इंडिया' के नाम से स्वीकार किया गया है। भारत दक्षिणी एशिया में हिंद महासागर के तटवर्ती देशों में एक केंद्रीय स्थिति रखता है तथा यह विश्व का एकमात्र ऐसा देश है, जिसके नाम पर किसी महासागर का नाम पड़ा है। भारत के भू-राजनीतिक, आर्थिक, व्यापारिक एवं भू-सामरिक क्षेत्र में हिंद महासागर की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

भारत का क्षेत्रफल 32.8 लाख वर्ग किमी. है जो विश्व के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 2.4% है। भारत विभिन्न भौतिक स्वरूपों में बँटा हुआ है जैसे– पर्वत, पठार, मैदान, झीलें इत्यादि, जो भारत के विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए हैं। कर्क रेखा भारत के मध्य से होकर गुज़रती है। भारत के संपूर्ण क्षेत्रफल का 10.7% भू-भाग पर्वतीय, 18.6% भू-भाग पहाड़ी, 27.7% भू-भाग पठारी एवं 43% भू-भाग मैदानी है।

12.1 भौगोलिक अवस्थिति *(Geographical Location)*

- भारत की आकृति लगभग चतुष्कोणीय है। इसका उत्तर-दक्षिण में अधिकतम विस्तार 3,214 किमी. तथा पूर्व-पश्चिम में अधिकतम विस्तार 2,933 किमी. है।
- मुख्य भूमि, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह तथा लक्षद्वीप समूह सहित भारत की तट रेखा की कुल लंबाई लगभग 7,516.6 किमी. है।
- भारत की स्थलीय सीमा की लंबाई 15106.7 किमी. (अन्य स्रोतों में 15,200 किमी.) है।
- भारत पूरी तरह से उत्तर-पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है। यह 6°4' (मुख्य भूमि 8°4' N) उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश के बीच तथा 68°7' पूर्वी देशांतर से 97°25' पूर्वी देशांतर तक विस्तृत है।
- भारत की मुख्य भूमि उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूर्व में अरुणाचल प्रदेश से लेकर पश्चिम में गुजरात तक फैली हुई है।
- भारत के उत्तर-पश्चिम, उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी सीमा पर नवीनतम मोड़दार पर्वतों का विस्तार पाया जाता है, जबकि दक्षिण में प्रायद्वीपीय क्षेत्र का विस्तार पाया जाता है। भारत का प्रायद्वीपीय भू-भाग उत्तर में अधिक चौड़ा तथा 22° उत्तरी अक्षांश से दक्षिण की ओर सँकरा होता गया है।
- हिमालय पर्वतमाला द्वारा भारतीय प्रायद्वीप की मुख्य भूमि को एशिया से अलग किया जाता है। भारत, पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण में हिंद महासागर से घिरा हुआ है।
- भारत की मुख्य भूमि से दूर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में स्थित दक्षिणतम बिंदु इंदिरा पॉइंट अथवा पिगमेलियन पॉइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप) तथा भारत का सबसे उत्तरी बिंदु 'इंदिरा कॉल' (जम्मू-कश्मीर) है। भारत का सबसे पूर्वी बिंदु 'किबीथु' (अंजा ज़िला, अरुणाचल प्रदेश) तथा पश्चिमी बिंदु गुहार मोती (कच्छ ज़िला, गुजरात) है।
- वर्तमान में भारत के जम्मू एवं कश्मीर राज्य को अक्टूबर 2019 में जम्मू एवं कश्मीर तथा लद्दाख दो केंद्रशासित प्रदेशों में विभाजित कर दिया गया है। दमन-दीव तथा दादरा और नागर हवेली दो केंद्रशासित प्रदेशों को मिलाकर एक केंद्रशासित प्रदेश का निर्माण कर दिया गया है। इसलिये अब भारत में 28 राज्य एवं 8 केंद्रशासित प्रदेश हो गए हैं। भारत के गृह मंत्रालय द्वारा नया मानचित्र का भी निर्माण किया गया है।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596